Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

सोनिया भारद्वाज [1*], डॉ. एस. के. त्रिवेदी [2]

[1] शोधकर्त्री शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान, भारत

[2] पर्यवेक्षक, शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * सोनिया भारद्वाज

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20281066

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन" शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य कोटा जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन एवं तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन में कोटा जिले के 20 विद्यालयों (10 राजकीय एवं 10 निजी) के 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चुना गया। आँकड़े संग्रहण हेतु डॉ. जी.पी. शैरी एवं डॉ. आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत जीवन मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्यमान, मानक विचलन एवं टी' परीक्षण सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि कोटा जिले के विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का स्तर औसत है। राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य, विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य तथा छात्रों एवं छात्राओं के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 04-04-2026
- **Accepted:** 16-05-2026
- **Published:** 18-05-2026
- **MRR:**4(5); 2026: 186-190
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सोनिया भारद्वाज, डॉ. एस. के. त्रिवेदी. विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(5):186-190.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

KEYWORDS: जीवन मूल्य, दृष्टिकोण, विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी, राजकीय विद्यालय, निजी विद्यालय, तुलनात्मक अध्ययन मूल्य शिक्षा, कोटा जिला

© 2026 सोनिया भारद्वाज, डॉ. एस. के. त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए एक मूल्य प्रणाली रखता है जिसमें जीवन के मूल्य एवं उनको बढ़िय़ा या घटिया ठहराने का सिद्धान्त विद्यमान है। प्रत्येक समाज की भी अपनी एक मूल्य-प्रणाली है। इसी मूल्य-प्रणाली को 'संस्कृति' कहते हैं। ये मूल्य ही मनुष्य के लिए आदर्श, उद्देश्य, लक्ष्य, गन्तव्य, मनोरथ एवं साध्य बनते हैं और वह जीवन को इनकी प्राप्ति के लिए लगा देता है। मूल्य ही जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, वफादारी, जिम्मेदारी, कत्र्तव्य-भावना आदि उत्पन्न करते हैं। मनुष्य अपने जीवन-दृष्टिकोण को मूल्य के आधार पर ही आधारित करता है। यदि जीवन में से प्रेम, सुन्दरता, न्याय, सत्य, मित्रता आदि निकाल दें, तो वह एक निरर्थक कार्य चक्र बन जाएगा जिसको कोई भी जीना नहीं चाहेगा। मूल्य ही मनुष्य के जीवन को अर्थ, आकर्षण, उज्जता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। 'मूल्य' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'वैल्यू' (Value) का हिन्दी रूपान्तर है। 'वैल्यू' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'वैलियर' (Valere) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है -योग्यता (Ability), उपयोगिता (Utility) और महत्त्व (Importance)। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में व्यक्ति या वस्तु का वह गुण, जिसके कारण उसका उपयोग या महत्त्व प्रकट होता है, मूल्य कहलाता है।

लेकिन मूल्य के सम्बन्ध में विभन्रि विचारकों ने भिन्न-भिन्न मत प्रतिपादित किये हैं। मूल्य क्या है? मूल्य वह है जो मानव-इच्छा को पूरा करता है। मानव की इच्छाओं को पूरा क्यों करना चाहिए? इसका उत्तर होगा कि जीवित रहने के लिए इच्छाएं पूरी करनी पड़ती हैं। परन्तु हम जीवित क्यों रहना चाहते हैं? इसके उत्तर में हम अपने जीवन के कुछ लक्ष्य या उद्देश्य बनाएंगे जिनके लिए हम जीते हैं। एक व्यक्ति कहता है कि वह कला की साधना के लिए, दूसरा कहता है कि वह सत्य क खोज के लिए और तीसरा कहता है कि वह ईश्वर प्राप्ति के लिए जीवित रहना चाहता है। एक कलाकार कला की रचना क्यों करना चाहता है क्योंकि उसके अनुसार कला तो कला के लिए है। इसी तरह सत्य सत्य के लिए, भलाई भलाई के लिए, कत्र्तव्य कत्र्तव्य के लिए तथा ईश्वर ईश्वर के लिए है। इस तरह हम ऐसे मूल्यों की अवधारणा पर पहुँच जाते हैं जो अन्तिम मूल्य हैं, जिनको अपने-आप में मूल्य मानना चाहिए, वे परम मूल्य हैं। दर्शन में इन्हीं स्वतः मूल्यों (Instrumntal Value) को मौलिक माना जाता है क्योंकि ये मनुष्य के उद्देश्य हैं। ये उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन हैं, जो परतः मूल्य (प्देजतनउदजंस टंसनम) हैं। परतः मूल्य का मूल्य उद्देश्य के मूल्य पर निर्भर है। यदि उद्देश्य मूल्यवान है तो उसको प्राप्त करने का साधन भी मूल्यवान होगा, जैसे चश्मे का देखने के लिए प्रयोग होता है, यही उसका मूल्य है। वास्तव में परतः मूल्य अपने आप में मूल्य ही नहीं है, स्वतः ही मूल्य है।

विभिन्न व्यक्तियों के लिए विभिन्न मूल्यों महत्त्व में अन्तर होता है। किसी एक व्यक्ति के लिए एक मूल्य अन्य मूल्यों से अधिक या कम महत्त्वपूर्ण हो सकता है। सभी व्यक्ति कुछ मूल्यों का समर्थन नहीं कर सकते। मूल्यों के महत्त्व की केवल दो विचारधारायें प्रचलित हैं -

1. **निरपेक्ष और शाश्वत महत्त्वः** कुछ लोग मूल्यों की निरपेक्ष व शाश्वत प्रकृति में विश्वास रखते हैं। उनके अनुसार कुछ मूल्य पूरे विश्व में सब कहीं सभी कालों में वांछनीय होते हैं। उनके अनुसार कुछ कार्य स्वभावतया बुरे या दोषपूर्ण होते हैं जबकि कुछ मानव कार्य प्रत्येक परिस्थिति में सदैव सही होते हैं। जैसे जरूरतमन्द लोगों की सहायता करना सार्वभौमिक रूप से एक अच्छा कार्य है जबकि हत्या या अनाचार करना सभी लोगों द्वारा निन्दनीय है। मूल्यों की यह निरपेक्ष प्रकृति सतही तौर पर उचित लगती है परन्तु कोई भी मूल्य ऐसा नहीं है जिसके किसी समय उल्लंघन के लिए व्यक्ति कोई न कोई औचित्यपूर्ण बहाना न खोज ले। मूल्य प्रतिमान की निरपेक्ष स्थिति किसी भी व्यक्ति द्वारा एक भी अपवाद खोज लेने पर समाप्त हो जाती है।
2. **सापेक्ष महत्त्वः** मूल्यों की निरपेक्षता के बजाय अनेक लोग उनकी सापेक्षता में विश्वास करते हैं। सापेक्षवादियों के मतानुसार, मूल्य-स्थितियों में अनेकता सम्भव है। समकालीन मानदण्डों को भूतकालीन मानदण्डों से श्रेष्ठ या निम्न नहीं माना जा सकता। सापेक्षवादी मानते हैं कि मूल्य निर्णयों से हमें एक व्यक्ति के वरीयता प्राप्त विचारों व कार्यों का पता चलता है। जब मूल्यों के सम्बन्ध में असहमति उभरती है तब लोग प्रायः एक-दूसरे की मूल्य प्राथमिकताओं से सहमत नहीं हो पाते। कुछ मूल्यों को दूसरे मूल्यों की अपेक्षा अधिक महत्त्व देते हैं। मूल्य संकट व असमंजस की स्थिति में मूल्य प्राथमिकताओं में परिवर्तन लाकर उनके समाधान की चेष्टा की जाती है।

सारांशतः मूल्य-सम्बन्धी ज्ञान दर्शन-शास्त्र का एक विशेष अंग है। इस शास्त्र में मूल्यों तथा अमूल्यों अथवा भावात्मक और अभावात्मक मूल्यों और कुछ दार्शनिकों के अनुसार, निष्पक्ष मूल्यों पर विचार किया जाता है। अब इसकी आधारभूत समस्या यह है कि 'मूल्य' क्या है? यह समस्या देखने में तो सरल है, किन्तु यथार्थ में यह उतनी ही जटिल है जितनी कि ज्ञान-शास्त्र की यह समस्या कि ज्ञान क्या है, और सत्ता शास्त्र का यह प्रश्न कि सत्ता अथवा यथार्थ क्या है?

नीति शास्त्र में 'उचित' तथा 'अनुचित' प्रत्ययों पर विचार होता है और मूल्य मीमांसा में मूल्य तथा अमूल्य अथवा शुभ एवं अशुभ का परीक्षण होता है। कहीं-कहीं दोनों प्रत्यय समानार्थक हो जाते हैं। उदाहरणार्थ, प्यासे को जल पिलाना उचित भी है और मूल्यवान अथवा शुभ भी है। पर कहीं-कहीं इन दोनों में अन्तर भी पड़ सकता है, उदाहरणार्थ, कोई चित्र सुन्दर एवं मूल्यवान हो सकता है, पर साथ ही साथ अनुचित भी हो सकता है, और इसके विपरीत कुछ लोगों के दृष्टिकोण में एक धर्मात्मा स्त्री का, दुर्बल एवं करुण अवस्था में तीज का निर्जला व्रत रखना उचित हो सकता है, पर चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि से वह उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तथ अशुभ भी हो सकता है।

मूल्य की संकल्पना ऐसे आदर्शों, मान्यताओं, नियमों तथा प्रतिमानों एवं आचार संहिताओं के रूप में की गई है, जो मानव जीवन के लक्ष्य या प्राप्तव्य है। मूल्य का निर्माण पालन संचालन और संरक्षण ही समाज का मुख्य कार्य है। सतत् कठिन साधना, प्रयोग, परीक्षण एवं अभ्यास के बाद हम मूल्य को स्वीकार करते हैं चूंकि ये चिंतन-मनन-विश्लेषण के बाद अपनाए जाते हैं इसलिए इनके दूरगामी परिणामों में भविष्य परिलक्षित होता है। मूल्यों से समाज अनुशासित, मर्यादित तथा नियन्त्रित जीवन पद्धति पर चल पाता है एवं उनसे उसका अस्तित्व भी सुरक्षित रहता है। मूल्यों से ही तो मनुष्य को सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी माना जाता है। मूल्यों की सुरक्षा के लिए उनका सम्वर्द्धन, परिपालन तथा स्वस्थ सम्प्रेषण होना चाहिए।

1.2 समस्या कथनः-

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत लिखा गया हैः-

© 2026 सोनिया भारद्वाज, डॉ. एस. के. त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

''विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन''

1.3 शोध की आवश्यकता एवं महत्व

मूल्यों के अभाव में व्यक्ति जीवन अथवा मानव जीवन की उन्नति, प्रगति एवं विकास कल्पना मात्र ही है। अतः सभी प्रकार के मूल्य जीवन मूल्य हैं। जीवन मूल्य व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर, उसे उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है। वे मानवीय चेतना के विकास के शक्तिशाली प्रेरक तत्व है । इसलिए शोधकर्ता द्वारा विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करने का निर्णय किया, इस शोध के परिणाम विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं नितिकारों आदि के लिये भी उपयोगी होंगे।

1.4 प्रस्तुत अध्ययन के उद्देष्य:- प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निम्नलिखित उद्देष्य निर्धारित किये गये -

1. कोटा जिले में जीवन मूल्यों के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. कोटा जिले में जीवन मूल्यों के प्रति राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. कोटा जिले में जीवन मूल्यों के प्रति कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. कोटा जिले में जीवन मूल्यों के प्रति छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

1.5 अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएं ली गई है -

1. कोटा जिले के विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण औसत स्तर का है।
2. कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. कोटा जिले के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. कोटा जिले के छात्रों और छात्राओं के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.6 शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

- **जीवन मूल्य**

मूल्यों के सम्बन्ध में सभी विद्वानों के विचार अलग-अलग है। सभी विद्वानों ने मूल्यों की अलग-अलग परिभाषाऐं दी थी। कुछ विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ –

आर. बी. पैरी के अनुसार: ''कोई भी लक्ष्य तब 'मूल्य' बन जाता है जब उसमे कोई रुचि लेता है, जैसे कोई भी चीज तब निशाना बन जाती है जब उस पर कोई निशाना लगाता है।''

जॉन डीवी के अनुसार: ''मुख्यतः मूल्य का अर्थ है पुरस्कृत करना, सम्मानित करना, प्रशंसा करना, अनुमान लगाना, यह किसी को पोषित एवं प्रेमपूर्वक चाहने की क्रिया है। यह तुलनात्मक अध्ययन की निर्णायक क्रिया भी है।''

आर.के. मुखर्जी के अनुसार: ''मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत वे प्रेरणाएँ एवं लक्ष्य है जो अनुकूलन, सीखने एवं समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति के भीतर स्थित होकर उसकी प्राथमिकताओं, स्तरों एवं आकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते है।''

- **विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी:** विज्ञान संकाय का चयन कर विशेष विषय के रूप में विज्ञान विषय लेने वाले विद्यार्थी।
- **कला वर्ग के विद्यार्थी:** कला संकाय का चयन कर विशेष विषय के रूप में कला विषय जैसे समाज शास्त्र, इतिहास,राजनीति विज्ञान आदि विषय लेने वाले विद्यार्थी।
- **दृष्टिकोण:**
  दृष्टिकोण का अर्थ: ''दृष्टिकोण'' शब्द का अर्थ विषेष वृत्ति से है। मन की वह वृत्ति जो किसी व्यक्ति, पदार्थ, परिस्थिति, संस्था या विचारों के प्रति हमारे आचरण का रूप निष्चित करती है, जिसके कारण इन बिन्दुओं के प्रति अपनाई गई कोई विषेष धारणा या विचार बना लेते वह दृष्टिकोण कहलाता है।

1.7 शोध का परीसीमन

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न प्रकार सीमा निर्धारण किया गया हैं:-
समयाभाव के कारण वर्तमान शोध प्रबंध को निम्न परिसीमाएं दी गई है-

1. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कोटा जिलें के विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों तक सीमित हैं।
2. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कोटा जिलें के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित हैं।
3. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कोटा जिले के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के मापन हेतु डॉ. जी. पी. शैरी व डॉ. आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत जीवन मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया।

1.8 अध्ययन की विधि

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति को नियोजित किया गया हैं।

1.9 अध्ययन का न्यादर्श

वर्तमान अध्ययन के लिए, शोध में कोटा जिले के कुल 20 विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया जाएगा। जिसमें भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर विद्यालयों का चयन किया जाएगा। कोटा जिले से दस राजकीय एवं दस निजी विद्यालयों के कुल बीस विद्यालयों से (30 विद्यार्थी प्रति विद्यालय) के उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयनित किया जाएगा। न्यादर्श का प्रस्तावित चयन निम्न प्रकार हैः-

© 2026 सोनिया भारद्वाज, डॉ. एस. के. त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

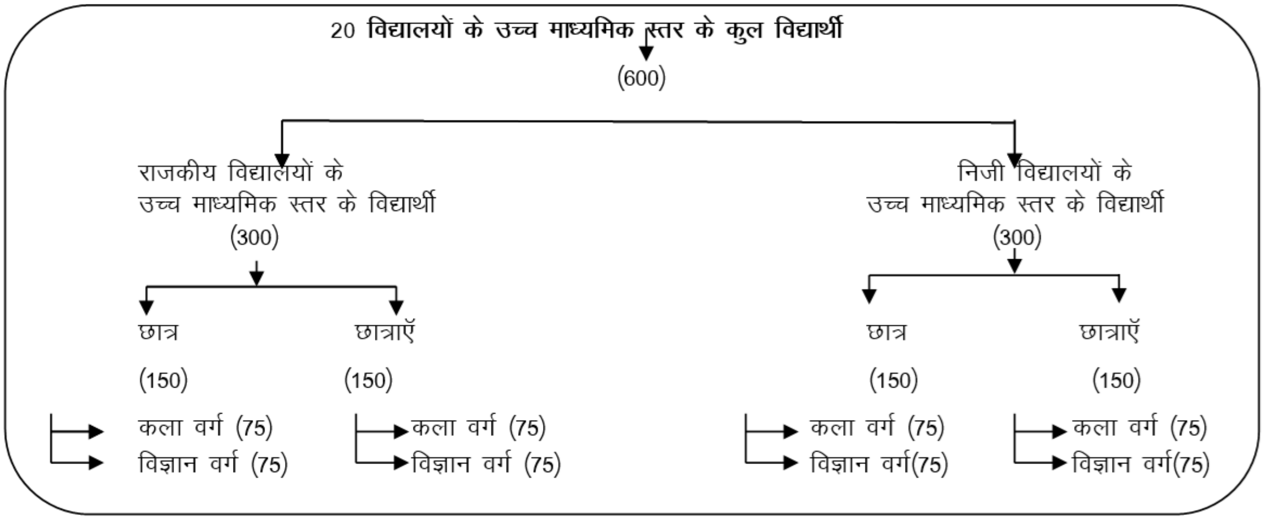

1.10 उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकत्र्री ने निम्नलिखित उपकरण को प्रयोग मे लिया हैंः-

1. डॉ. जी. पी. शैरी व डॉ. आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत जीवन मूल्य मापन प्रश्नावली

1.11 प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक

दत्त सामग्री के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया है -

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी' परीक्षण

1.12 निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष हैं।

- **कोटा जिले के विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण के स्तर का निष्कर्ष**
- परिकल्पना संख्या-1 कुल न्यादर्श पर कोटा जिले के विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण औसत स्तर का है। '' आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक सम्मान मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के सन्दर्भ में चयनित तथा धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के सन्दर्भ में अचयनित की जाती है ।
- कोटा जिले के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर प्राप्त मध्यमान का मान धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य के प्राप्तांको का मध्यमान औसत मान से अधिक है। तथा आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक सम्मान मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के प्राप्तांको का मध्यमान औसत है जबकि सुखवादी मूल्य के प्राप्तांक का मध्यमान औसत मान से कम है।

कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण के तुलनात्मक विश्लेषण का निष्कर्ष

- परिकल्पना संख्या- 2 ''कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' समस्त आयामों यथाः धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखवादी मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक सम्मान मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के सन्दर्भ में चयनित की जाती है।
- कोटा जिले के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के यथाः- सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के प्राप्तांको का मध्य कोटा जिले के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक है।
- जबकि कोटा जिले के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सुखवादी मूल्य एवं पारिवारिक सम्मान मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान कोटा जिले के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक है।

कोटा जिले के विद्यालयों के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण के तुलनात्मक विश्लेषण का निष्कर्ष

- परिकल्पना संख्या- 3 ''कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' समस्त आयामों यथाः धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखवादी मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक सम्मान मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के सन्दर्भ में चयनित की जाती है।
- कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के यथाः- प्रजातान्त्रिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सुखवादी मूल्य एवं पारिवारिक सम्मान मूल्य के प्राप्तांको का माध्य कोटा जिले के विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक है।

© 2026 सोनिया भारद्वाज, डॉ. एस. के. त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जबकि कोटा जिले के विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक है।

कोटा जिले के विद्यालयों के छात्र और छात्राओं के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण के तुलनात्मक विश्लेषण का निष्कर्ष

- परिकल्पना संख्या- 4 ''कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं के मध्य जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' ज्ञानात्मक मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के अतिरिक्त शेष समस्त आयामों यथाः धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सुखवादी मूल्य, शक्ति मूल्य एवं पारिवारिक सम्मान मूल्य के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है।
- कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों के जीवन मूल्यों के यथाः- सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सुखवादी मूल्य, शक्ति मूल्य एवं स्वास्थ्यात्मक मूल्य के प्राप्तांको का माध्य कोटा जिले के विद्यालयों की छात्राओं से अधिक है। जबकि कोटा जिले के विद्यालयों की छात्राओं के धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य एवं पारिवारिक सम्मान मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों से अधिक है।

1.13. सुझाव

1. मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का सक्रिय अंश बनाया जावे।
2. स्वयं शिक्षकों को मूल्यों के अनुरूप आचरण नियत करना होगा।
3. स्कूलों में नियमित रूप से पाठ्यसहगामी क्रियाएं आयोजित कर इनकी जिम्मेदारियां विद्यार्थियों के मध्य विभाजित कर दी जावे।
4. विद्यार्थियों को अनुशासन के क्षेत्र में आत्मनियंत्रण का प्रशिक्षण दिया जाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थाना, एम., एवं वर्मा, के. बी. (2008). व्यक्तित्व मनोविज्ञान. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
2. कुमार, डी. (2012). समाजशास्त्र. नई दिल्ली: टाटा मैकग्रा हिल एजूकेशन लिमिटेड।
3. गुप्ता, एस. पी. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
4. राय, पी. (2010-11). अनुसंधान परिचय. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन।
5. वोहरा, ए. आर. (2006). मानसिक स्वास्थ्य और मनःचिकित्सा. दिल्ली: आर्य प्रकाशन मंडल।
6. पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा रू अग्रवाल पब्लिकेशन
7. शर्मा, डी.एल. (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो
8. सिंह, रामपाल,सिंह,नगेन्द्र एवं सेवानी, अशोक (2012), शिक्षा एवं समाज, आगराःअग्रवाल पब्लिकेशन.पृ.स.112
9. http://en.wikipedia.org/wiki/Social_competence Retrieve
10. http:// advan.physiology.org/content/by/year Retrieve

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author

सोनिया भारद्वाज शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में शोधरत हैं। वे श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान में शोधकर्त्री के रूप में कार्य कर रही हैं। उनकी शैक्षणिक रुचियाँ शारीरिक शिक्षा, खेल मनोविज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास से संबंधित अनुसंधान कार्यों में केंद्रित हैं।

डॉ. एस. के. त्रिवेदी शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं शोध मार्गदर्शक हैं। वे श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान में पर्यवेक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उनकी विशेषज्ञता शारीरिक शिक्षा, खेल प्रशिक्षण, शैक्षिक अनुसंधान तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से संबंधित अकादमिक एवं शोध गतिविधियों में है।

© 2026 सोनिया भारद्वाज, डॉ. एस. के. त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/